क्या सिफलिस कोलंबस के साथ युरोप आई?

ट्रिपोनेमा पैलिडमः लंबा प्रवास

यह एक पुरानी बहस रही है कि क्या सिफलिस बीमारी युरोप से अमरीका पहुंची या अमरीका से युरोप आई। यह भी बहस का विषय रहा है कि क्या इसे एक महाद्वीप से दूसरे तक ले जाने में मशहूर जहाज़ी अन्वेषक क्रिस्टोफर कोलंबस की कोई भूमिका थी। ताज़ा जिनेटिक प्रमाणों से लगता है कि सिफलिस मूलतः अमरीका की एक बीमारी यॉज़ का परिवर्तित रूप है और इसके बैक्टीरिया (*ट्रिपोनेमा पैलिडम*) को अमरीका से युरोप लाने का काम कोलंबस ने ही किया था।

सिफलिस एक कुंडली नुमा बैक्टीरिया द्वारा फैलाया जाने वाला यौन वाहित रोग है जो हृदय-रक्तवाहिनियों तथा तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। सिफलिस की भौगोलिक उत्पत्ति की बहस सोलहवीं सदी से ही चली आ रही है।

कोलंबस और सिफलिस के सम्बंधों का आधार यह है कि 1495 में नेपल्स में सिफलिस की महामारी फैली थी। कोलंबस इससे दो साल पहले ही अमरीका से लौटे थे। कई दशकों तक पुरा-रोग वैज्ञानिक यह कोशिश करते रहे कि प्राचीन मानव कंकालों में इस बीमारी के लक्षण मिल जाएं।

इसका एक प्रमुख लक्षण हड्डियों पर विशिष्ट खरोंचों के रूप में सामने आता है। सन 2000 में ब्रिटेन में एक नर कंकाल मिला था जिसमें इस तरह के लक्षण मिले थे। इस कंकाल की उम्र पता की गई तो यह कोलंबस से कम से कम 50 साल पुराना निकला था। तब कोलंबस बरी कर दिए गए थे। मगर बाद में पता चला कि कंकाल की उम्र आंकने में गलती हुई थी। तो शक की सुई एक बार फिर कोलंबस की ओर घूम गई।

अब एमरी विश्वविद्यालय की क्रिस्टिन हार्पर ने जिनेटिक विश्लेषण के आधार पर फिर एक बार दावा किया है कि सिफलिस वाकई अमरीका की बीमारी है। हार्पर व उनके साथियों ने 22 मानव *ट्रिपोनेमा* सैम्पल प्राप्त किए। इनमें से दो गुयाना के गांवों से प्राप्त किए गए थे जो दरअसल यॉज़ के सक्रिय प्रकोप के नमूने थे। यॉज़ बीमारी *ट्रिपोनोमा* की एक अन्य प्रजाति *ट्रिपेनोमा पर्टेन्यू* के कारण होती है। जब इन नमूनों और सिफलिस बैक्टीरिया के जीनोम की तुलना की गई तो इनमें कई समानताएं मिलीं। समानताएं इतनी अधिक हैं कि हार्पर का मानना है कि *ट्रिपेनोमा पैलिडम* का विकास *पर्टेन्यू* से ही हुआ होगा। यानी वे कह रही हैं कि मूल बैक्टीरिया अमरीका से ही युरोप पहुंचा है।

अलबत्ता, अन्य विशेषज्ञों का मत है कि हार्पर के पास इतने आंकड़े नहीं हैं कि यह निष्कर्ष निकाला जा सके। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जो नमूने उन्हें प्राप्त हुए वे काफी क्षतिग्रस्त थे। मगर उनके विश्लेषण से पता चलता है कि रोगों के फैलाव के अध्ययन में जिनेटिक विश्लेषण मददगार साबित हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***